''मसीह की कलीसिया कैसे संगठित थी?''

I. मसीह की कलीसिया में किसका ज़्या स्थान था?

1. यीशु कलीसिया का _____ है। इफिसियों 5:25
2. _____ और _____ नींव हैं। इफिसियों 2:20
3. उसने कितनों को _____, और कितनों को _____,और कितनों को _____ और कितनों को _____ और _____. नियुज़्त करके दे दिया। इफिसियों 4:11

II. इन पदों का उद्देश्य _____ _____ _____ था। इफिसियों 4:12, 13

III. इन पदों की ज़्या ज़िज़्मेदारियां थीं?

1. यीशु _____ है। याकूब 4:12; प्रेरितों 3:23
2. प्रेरितों ने लोगों को यीशु की बातें _____ सिखाना था। मज़ी 28:20
3. यह शिक्षा _____ और _____ पर प्रकट की गई थी। इफि. 3:3-5
4. कलीसिया _____ से शिक्षा पाने में लौलीन रही। प्रेरितों 2:42
5. प्राचीनों (ऐल्डरों) का काम परमेश्वर के झुण्ड को _____ (यूनानी, *Poimaino*, Pastor, Shepherd) और _____ करना है। 1 पतरस 5:1, 2
6. पौलुस ने _____(प्रेरितों 20:17) को बुलाकर कहा कि उस कलीसिया की _____ (*poimaino*) करें जिस पर उन्हें _____ (*episkopos*, bishops) ठहराया गया था। प्रेरितों 20:28
7. सुसमाचार सुनाने वालों (इवेंजलिस्टों) का काम वचन का _____ करना था। 2 तीमु. 4:2, 5
8. उपदेशकों का काम दूसरों को _____ था। 2 तीमु. 2:2
9. कलीसिया में _____ (*diakonos*, अर्थात सेवा करने वाले) होते थे। 1 तीमु. 3:8
10. मण्डलियों में स्त्रियों को _____ रहना होता था। 1 कुरि. 14:34, 35; 1 तीमु. 2:10-12
11. सदस्यों के लिए अपने अगुओं की _____ आवश्यक था। इब्रा. 13:17

IV. प्रत्येक कलीसिया में कितने रखवाले (ऐल्डर, बिशप, पास्टर) होते थे?

1. प्रत्येक कलीसिया में _____ ठहराए जाते थे। प्रेरितों 14:23; तीतुस 1:5

2. इन मण्डलियों में _____ थे। प्रेरितों 15:2; 20:17; फिलि. 1:1

V. ज़्या इन पदों पर सेवा करने से पहले विशेष योग्यताएं होनी आवश्यक थीं?

1. प्रेरितों के लिए _____ प्रेरितों 1:21, 22
2. प्राचीनों के लिए _____ 1 तीमु. 3:1-7; तीतुस 1:5-9
3. डीकनों के लिए _____ 1 तीमु. 3:8-13
4. सुसमाचार सुनाने वालों के लिए _____ 2 तीमु. 2:24, 25
5. उपदेशकों के लिए _____ 1 पतरस 4:11

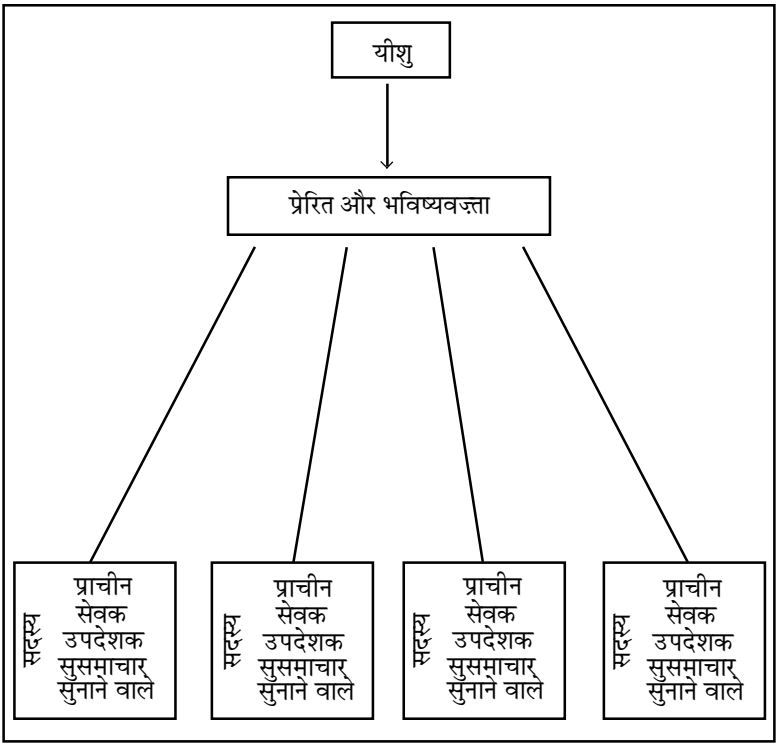

अध्ययन शीट प्रस्तुत करना:

''मसीह की कलीसिया कैसे संगठित थी?''

तर्कसंगत रूप से ''मसीह की कलीसिया कैसे संगठित थी?'' अध्ययन शीट को ''कलीसिया'' अध्ययन शीट (पाठ 5) के बाद प्रस्तुत किया जा सकता है। यदि सीखने वाला सुसमाचार को ग्रहण करने के लिए तैयार है, तो ''संगठित'' अध्ययन शीट का अध्ययन करने से पहले ''भविष्य'' अध्ययन शीट (पाठ 8) का अध्ययन करने का फैसला लिया जा सकता है।

उद्देश्य

''संगठित'' अध्ययन शीट का उद्देश्य कलीसिया का सांगठनिक अध्ययन करना है कि यीशु और प्रेरितों ने इसे कैसे संगठित किया था ताकि हम समझ सकें कि यीशु के अनुयायियों को कैसे संगठित होना चाहिए।

संक्षेप में पाठ

यह अध्ययन शीट दिखाती है कि कलीसिया का सिर अर्थात यीशु ही कलीसिया का एक मात्र नियम बनाने वाला है। यीशु के विशेष प्रतिनिधियों के रूप में, प्रेरितों को यीशु के नियम दूसरों को सौंपने का काम मिला था ताकि उन्हें भी यीशु के वचन का पता चल सके। प्राचीनों (ऐल्डरों) का काम इस वचन को मानने के लिए मण्डलियों की अगुआई करना था। डीकनों और इवेंजलिस्टों का काम प्राचीनों की सहायता करना और मण्डली का काम यीशु की इच्छा पूरी करने के लिए अगुओं की बात मानना था।

परिचय

इस तथ्य पर संक्षेप में बात करके कि प्रभावकारी और फलदायक होने के लिए संगठन का होना आवश्यक है, इस पाठ का परिचय दिया जा सकता है। यीशु ने अपनी कलीसिया के लिए संगठन का प्रबंध किया था। यीशु के अनुयायियों के रूप में हमें संगठन की उसकी योजना के अनुसार चलने की खोज में रहना चाहिए।

आज कलीसियाएं अलग-अलग तरह से संगठित होती हैं। सामान्यतया इन कलीसियाओं

का एक मजबूत केन्द्रीय प्रबंध होता है जो धर्म सज़्बन्धी नियम बनाता है तथा कुछ मामलों में स्थानीय मण्डलियों को आदेश देता और उनके कुछ आंतरिक मामलों पर नियन्त्रण रखता है। ज़्या यीशु ने अपनी कलीसिया के लिए ऐसी ही योजना बनाई थी?

I. पद

इस पाठ में, जब हम पदों की बात करते हैं, तो हम अधिकार की उतनी बात नहीं करते जितनी ज़िज़्मेदारियों की करते हैं। कई मामलों में अधिकार पद के कारण ही मिल जाता है, परन्तु सब मामलों में नहीं; जबकि सब पदों में जिज़्मेदारियां होती हैं।

1. ''कलीसिया'' अध्ययन शीट (पाठ 5) के अध्ययन से हमें पता चला था कि कलीसिया मसीह के अधीन है। यीशु का कलीसिया से ज़्या सज़्बन्ध है? [इफिसियों 5:23 पढ़ें] वह कलीसिया का *ज़्या* है? [रिज़्त स्थान में ''सिर'' भरें।]

2. किसी भी भवन को बनाने से पहले, उसकी नींव बनाई जाती है। नींव उस इमारत के नीचे *रहती* है और सारी इमारत उस नींव पर ही टिकी होती है। कलीसिया की नींव में कौन लोग हैं? [इफिसियों 2:20 पढ़ें] इस रूपक में यीशु को नींव के कोने के पत्थर के रूप में दिखाया गया है। एक बार कोने का पत्थर रखने के बाद, सारी इमारत कोने के पत्थर से ही जुड़कर बनती है। नींव *कौन* लोग हैं? [रिज़्त स्थान में ''प्रेरित'' और ''भविष्यवज़्ता'' भरें।] इस आयत में जिन भविष्यवज़्ताओं की बात की गई है वे पुराने नियम के नहीं बल्कि नये नियम के भविष्यवज़्ता हैं।

यह उसके साथ कोई टकराव नहीं है जो हमने ''कलीसिया'' अध्ययन शीट (पाठ 5) में सीखा था। उस पाठ में हमने सीखा था कि *केवल* यीशु ही एकमात्र नींव है (1 कुरिन्थियों 3:11)। उस रूपक में प्रेरित नींव डालने वाले हैं और उन पर सारी इमारत बनती है। इस रूपक में यीशु नींव में मुज़्य चट्टान अर्थात कोने का पत्थर है। कलीसिया में प्रेरितों समेत सब कुछ, यीशु को देखकर ही चलता है, जिस पर कलीसिया बनाई जानी चाहिए ज़्योंकि वे स्वर्ग में उसके लौटने के बाद से ही उसके प्रतिनिधियों के रूप में यीशु की जगह खड़े हैं। कलीसिया में उनकी भूमिका पर हम बाद में चर्चा करेंगे।

3. पौलुस ने इफिसुस में कलीसिया के नाम पत्र लिखते हुए किन पदों की सूची बनाई? [इफिसियों 4:11 पढ़ें।] वे पद *ज़्या* हैं? [रिज़्त स्थानों में ''प्रेरित,'' ''भविष्यवज़्ता,'' ''सुसमाचार सुनाने वाले,'' ''रखवाले,'' और ''उपदेशक'' भरें।] अगले भाग में हम इन सभी की ज़िज़्मेदारियों के बारे में एक-एक करके अध्ययन करेंगे।

इस भाग से हमने ज़्या सीखा है? हमने सीखा कि कलीसिया में अलग-अलग पद थे जो कलीसिया के सिर अर्थात यीशु के अधिकार में काम करते थे।

II. इन पदों का उद्देश्य

कलीसिया में ये पद सेवा करने वालों का सज़्मान बढ़ाने के लिए नहीं रखे गए थे। इन पदों पर सेवा करने वालों ने ज़्या करना था? [इफिसियों 4:12, 13 पढ़ें।] इन पदों की

स्थापना *क्यों* की गई थी ? [रिक्त स्थानों पर ''पवित्र लोगों की सिद्धता,'' ''सेवा का काम,'' ''मसीह की देह की उन्नति'' भरें।] ध्यान दें कि ये सेवाएं ज़िम्मेदारियां हैं। इन पदों पर काम करने वालों की ज़िम्मेदारी कलीसिया के सदस्यों को मज़बूत बनाने, अपना नमूना देकर विश्वास में बढ़ाने अर्थात अपने आदर्श यीशु के डील डौल तक बढ़ने में सहायता करना था।

इस भाग में हमने क्या सीखा है ? हमने सीखा है कि कलीसिया में अलग-अलग सेवाएं करने वालों का काम कलीसिया की उन्नति और मज़बूती था।

III. ज़िम्मेदारियां

कलीसिया में विभिन्न पदों पर रहते हुए सेवा करने वालों का काम यह दिखाना था कि कलीसिया के विकास और सेवा के लिए क्या सहायक है।

1. प्रत्येक संगठन में दिशानिर्देश होने आवश्यक हैं। कलीसिया के लिए नियम और निर्देश किसने बनाए हैं ? [याकूब 4:12 और प्रेरितों 3:23, 24 पढ़ें।] कलीसिया के सिर के रूप में अपने पद पर, यीशु *क्या* है ? [रिक्त स्थान में ''नियम देने वाला'' भरें।] कलीसिया में नियम देने वाले कितने लोग हैं ? कलीसिया में नियम देने वाला केवल *एक* ही है। वह उन सबको जो उसके नियमों को नहीं मानते, नाश कर देगा।

[*पिछली ओर* कागज़ पर सबसे ऊपर एक बॉक्स बनाएं और उसमें ''यीशु'' लिखें। देखें पृष्ठ 158।]

2. प्रेरितों को नियम बनाने, का कोई अधिकार नहीं था। उनकी ज़िम्मेदारी क्या थी ? [मत्ती 28:20 पढ़ें।] उन्होंने कलीसिया को *क्या* करना सिखाना था ? [रिक्त स्थान में ''मानना'' भरें।] उन्हें लोगों पर नियम लागू करने का कोई अधिकार नहीं था। उनका दायित्व लोगों को वे सब बातें सिखाना था जो यीशु ने उन्हें सिखाने की आज्ञा दी थी।

3. पिता के पास ऊपर उठा लिए जाने के बाद यीशु ने अपनी शिक्षा प्रकट करने के लिए अलग-अलग लोगों की सेवा ली। उसने अपनी शिक्षा *किन* पर प्रकट की ? [इफिसियों 3:3-5 पढ़ें।] उसने इसे *किन* पर प्रकट किया [रिक्त स्थान में ''प्रेरितों'' और ''भविष्यवक्ताओं'' भर लें।]

4. पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु ने प्रेरितों पर सब सत्य प्रकट किया था। जब वे बात करते थे, तो वे यीशु की बातें ही लोगों तक पहुंचा रहे थे जो उन्होंने उससे सुनी थीं (यूहन्ना 16:13-15)। यदि हम वही मानते हैं जो प्रेरितों ने सिखाया था तो हम यीशु की ही बात मान रहे होते हैं। कलीसिया किसकी शिक्षा में बनी रही थी ? [प्रेरितों 2:42 पढ़ें।] वे किसकी *शिक्षा* में लौलीन रहे ? [रिक्त स्थान में ''प्रेरितों'' भरें।] प्रेरितों को उनकी शिक्षा यीशु से मिली थी अत: इसका अर्थ यह है कि प्रेरितों की शिक्षा में बने रहकर वे यीशु की शिक्षा में बने हुए थे।

[*पिछली ओर* ''यीशु'' के नीचे एक बॉक्स बनाएं और उसमें ''प्रेरित और भविष्यवक्ता'' लिख लें। फिर ''प्रेरित और भविष्यवक्ता'' के नीचे कुछ और बॉक्स बनाएं। देखें पृष्ठ 158।] कलीसियाएं प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के प्रति जवाबदेह थीं क्योंकि यीशु ने उनके द्वारा ही अपनी शिक्षा दी थी।

5. स्थानीय मण्डलियों के अगुओं के पास कलीसिया के लिए नियम बनाने का कोई अधिकार नहीं था। उनकी ज़िम्मेदारी यीशु के निर्देशों को मानने के लिए मण्डलियों की अगुआई करना थी। इन अगुओं को प्राचीन (ऐल्डर) कहा जाता था, जिन्होंने ज़्या करना होता था? [1 पतरस 5:1, 2 पढ़ें।] उन्होंने झुंड को *ज़्या* करना होता था? [रिज़्त स्थान में ''चराना'' भरें।] ''चराना'' जिस यूनानी शज़्द *poimaino* से अनुवादित किया गया है उसका अर्थ ''पास्टर (रखवाला)'' या ''चरवाहा'' हो सकता है। प्राचीनों (ऐल्डरों) का काम झुंड की चरवाही करना था। प्राचीनों का और *ज़्या* काम होता था? [रिज़्त स्थान में ''रखवाली'' भरें।]

6. पौलुस ने इफिसुस की कलीसिया के अगुओं को निर्देश दिया। उन्हें ज़्या कहा गया है? [प्रेरितों 20:17 पढ़ें।] कलीसिया के अगुओं के लिए *ज़्या* शज़्द इस्तेमाल किया गया है? [रिज़्त स्थान में ''प्राचीनों'' भरें।] उन्हें ज़्या करने के लिए कहा गया था? [प्रेरितों 20:28 पढ़ें।] उन्हें *कौन से दो काम* करने के लिए कहा गया था? [रिज़्त स्थानों में ''चौकसी'' और ''अध्यक्ष'' भरें।]

मण्डलियों के अगुओं के लिए इस्तेमाल किए गए तीन शज़्द केवल उपाधियां नहीं थीं बल्कि अगुओं को दिए पदों में उनके कामों का वर्णन था। ''प्राचीन'' शज़्द का अर्थ है कि उन्हें उन पुरुषों में से चुना जाता था जो दृढ़ विश्वासी होते थे, न कि नये बने मसीहियों में से। समाज के अगुओं को आम तौर पर ''बुज़ुर्ग'' कहा जाता था। ''चौकसी'' (यूनानी शज़्द *poimaino* से लिया गया) ऐसा शज़्द है जिसका अर्थ भेड़ों के झुंड़ को चराने वाले या उसकी देखभाल करने वाले के अर्थ में ''चरवाहा'' या ''रखवाला'' (पास्टर) किया जाता है। ''अध्यक्ष'' (''बिशप'') का (यूनानी शज़्द *episkopos* से लिया गया) अर्थ भी मण्डली के कामों में निर्देश देना है। ये अलग-अलग तीन पद *नहीं* हैं बल्कि एक ही पद का वर्णन करने वाले तीन अलग-अलग शज़्द हैं। [*पिछली ओर* ''प्रेरित और भविष्यवज़्ता'' के नीचे प्रत्येक खाली बॉज़्स में सबसे ऊपर ''प्राचीन'' लिखें। देखें पृष्ठ 158।]

ये वे लोग थे जो उस मण्डली के पास्टर अर्थात अध्यक्ष होते थे जिनके वे स्वयं सदस्य होते थे। उनका कोई सांसारिक मुज़्यालय नहीं था, बल्कि वे प्रेरितों और भविष्यवज़्ताओं के अधीन थे जो कि मसीह के अधीन थे। मण्डली के लिए नियम बनाने का उनको कोई अधिकार नहीं था। उनका काम अगुआई करना था, नियम बनाना नहीं।

वे *''पास्टर''* नहीं होते थे। मण्डली की अगुआई का काम प्राचीनों (एल्डरों) के हाथ में होता था जिन्हें बिशप्स (अध्यक्ष) और पास्टर्स (चरवाहे) भी कहा जाता है।

7. प्राचीनों के निर्देशन में सेवा करने वाले अर्थात यीशु की शिक्षा को फैलाने में सहायता करने वालों को सुसमाचार प्रचारक अर्थात इवेंजलिस्ट कहा जाता था। पौलुस ने उन्हें ज़्या निर्देश दिया? [2 तीमुथियुस 4:2, 5 पढ़ें।] एक सुसमाचार प्रचारक का *ज़्या* काम था? [रिज़्त स्थान में ''प्रचार'' भरें। *पिछली ओर* बॉज़्सों में ''सुसमाचार सुनने वालों या इवेंजलिस्ट'' लिखें देखें पृष्ठ 158।] सुसमाचार प्रचारकों का काम *वचन* का प्रचार करना होता था। मसीही लोगों के पास प्रचार करने के लिए केवल *एक* ही वचन अर्थात संदेश

होता था, और वह वही संदेश था जो यीशु ने प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के द्वारा दिया था। उन्हें कलीसिया के लिए नियम या कानून बनाने का कोई अधिकार नहीं दिया गया था। जो संदेश उन्हें लोगों को सुनाना होता था वह वही था जो यीशु ने आरम्भ में दिया था।

8. *क्या* उपदेशक अर्थात सिखाने वाले भी प्राचीनों के निर्देशन में काम करते थे? उनका काम *क्या* करना होता था? [2 तीमुथियुस 2:2 पढ़ें।] सिखाने वालों की ज़िम्मेदारी *क्या* है? [रिक्त स्थान में ''सिखाना'' भरें। *पिछली ओर* बॉक्सों में ''उपदेशक'' लिखें। देखें पृष्ठ 158।] उनका काम वे बातें सिखाना होता था जो उन्होंने प्रेरितों से, विशेषत: पौलुस प्रेरित से सीखी थीं। पौलुस ने पवित्र आत्मा के द्वारा प्रभु यीशु से संदेश पाया था (इफिसियों 3:3-5)। सिखाने वाले दूसरों पर लागू करने के लिए नियम नहीं बनाते थे बल्कि वे वही संदेश देते थे जो यीशु से प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं को मिला था ।

9. कलीसिया में और भी लोग थे जिन पर अगुआई करने की जिम्मेदारी नहीं थी। वे लोग कौन थे? [1 तीमुथियुस 3:8 पढ़ें।] उन्हें *क्या* कहा जाता था? [रिक्त स्थान में ''सेवक'' भरें। *पिछली ओर* बॉक्सों में ''सेवक'' लिखें। देखें पृष्ठ 158।]यूनानी शब्द *diakonos* जिसका अनुवाद सेवक हुआ है, का लिप्यांतरण अंग्रेज़ी का ''डीकन'' शब्द है। इस शब्द का अर्थ सेवा करना ही है। इन पुरुषों को रखवाली करने के लिए नियुक्त नहीं किया जाता था, परन्तु ये वे जिम्मेदार लोग होते थे जिन पर प्राचीनों को विश्वास होता था कि उन्हें जो मण्डली की कुछ महत्वपूर्ण सेवा करने के लिए कहा जाए, तो वे उसे पूरा करेंगे।

10. मण्डलियों में महिलाओं की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी। वे कलीसिया में कुछ महानतम कर्मियों के साथ सेवा करती थीं (फिलिप्पियों 4:3)। महिलाओं पर कुछ पाबंदियां भी थीं। स्त्रियों की भूमिका के सम्बन्ध में पौलुस ने *क्या* लिखा? [1 कुरिन्थियों 14:34, 35; 1 तीमुथियुस 2:10-12 पढ़ें।] स्त्रियों पर *क्या* पाबंदियां थीं? [रिक्त स्थान में ''चुप'' भरें।]

हर मसीही पर कुछ पाबंदियां रहती हैं, और सब लोग एक ही तरह की सेवा नहीं कर सकते थे (1 कुरिन्थियों 12:28, 29)। ठहराए हुए अगुओं के रूप में केवल कुछ पुरुष ही सेवा कर सकते थे, और सभी को सुसमाचार प्रचारक (इवेंजलिस्ट), डीकन या उपदेशक नहीं ठहराया गया था। महिलाएं भी पुरुषों की तरह ही पूरी क्षमता से सेवा कर सकती हैं *केवल* दो प्रतिबंधों के साथ: उन्हें मण्डलियों में अगुआई करने या मण्डलियों में अगुवे बनने की मनाही है। घरों में बच्चों के निकट होने के कारण, महिलाएं पुरुषों की तरह ही कलीसिया को बच्चों के द्वारा प्रभावित कर सकती हैं। बच्चे पैदा कर और उनका पोषण करके (1 तीमुथियुस 2:15) वे महिमा पा सकती हैं और स्त्री के रूप में अपनी भूमिका में उद्धार पा सकती हैं, जो भूमिका पुरुषों को नहीं मिली है।

11. सदस्यों की अगुआई उन लोगों ने करनी होती थी जिन्हें प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के द्वारा निर्देश मिलते थे। उन्हें मण्डली के अगुओं की बात कैसे माननी होती थी? [इब्रानियों 13:17 पढ़ें।] उन्हें अपने अगुओं की बात *कैसे* माननी होती थी? [रिक्त स्थान में ''मानना'' भरें। *पिछली ओर* बॉक्सों में ''सदस्य'' लिखें। देखें पृष्ठ 158।] अगुओं का काम सदस्यों को यीशु

द्वारा सिखाए गए जीवन और आराधना में अगुआई देना होता था। आत्मिक अगुआई के लिए मण्डली को अपने अगुओं का निर्देश मानना आवश्यक होता था।

हमने इस भाग में ज़्या सीखा है ? हमने सीखा कि जब कलीसिया सही ढंग से संगठित होती है, तो यीशु पूरी कलीसिया का सिर होता है। यीशु ने प्रेरितों और नये नियम के भविष्यवक्ताओं के द्वारा कलीसिया के लिए आवश्यक निर्देश दे दिए हैं। कलीसिया में यीशु, प्रेरितों, और भविष्यवक्ताओं के पद स्थाई हैं, जिनका कोई उज़राधिकारी नहीं है अर्थात कोई उनकी जगह नहीं ले सकता। कलीसिया में वास्तविक प्रेरित और भविष्यवक्ता केवल वही थे जिन्होंने यीशु के स्वर्ग में वापस उठा लिए जाने के थोड़ी देर बाद सेवा की थी और जिनके द्वारा नया नियम दिया गया था। यीशु की इच्छा को, जो एक ही बार हमेशा के लिए बता दी गई थी, सीखने के लिए कलीसिया को उनकी बात माननी चाहिए, (यहूदा 3)। मसीह की कलीसिया लोगों का वह समूह है जो वह काम करने का इच्छुक है जो यीशु ने आप संगठित रूप में करने के लिए दिया है।

IV. अगुओं की गिनती

1. इस पाठ में पहले हमने सीखा है कि मण्डलियों में अगुआई करने का काम प्राचीनों का है। ज़्या प्रत्येक मण्डली में *एक* प्राचीन (अर्थात ऐल्डर, पास्टर या बिशप) होता है या *कई* प्राचीन ? [पढ़ें प्रेरितों 14:23; तीतुस 1:5.] प्रत्येक मण्डली के लिए ज़्या *केवल एक* ही प्राचीन होता था या एक से अधिक चुने जाते थे ? [रिक्त स्थान में ''प्राचीन'' भरें।] यह तथ्य कि *प्राचीन* (बहुवचन में) चुने जाते थे, यह अर्थ देता है कि मण्डलियों में एक से अधिक प्राचीनों की संज़्या होती थी।

2. प्रेरितों के काम की पुस्तक में कलीसियाओं के संगठित होने के बाद का वर्णन है। ज़्या उन मण्डलियों में केवल *एक* प्राचीन होने की बात मिलती है ? [प्रेरितों 15:2; 20:17; फिलिप्पियों 1:1 पढ़ें।] *ज़्या* मण्डलियों में एक प्राचीन होता था या एक से अधिक ? [रिक्त स्थान में ''प्राचीन'' भरें।]

इस भाग से हमने ज़्या सीखा है ? हमने सीखा कि प्रभु की मण्डलियों में एक आदमी के शासन की प्रथा नहीं थी। मण्डलियों के काम एक ही व्यक्ति की निगरानी में नहीं होते थे। प्रत्येक मण्डली में दो या इससे अधिक अगुओं को ठहराया जाता था, जो कि इस तथ्य से स्पष्ट है कि मण्डली के ''प्राचीन'' (एक ऐल्डर) होने का कहीं उल्लेख नहीं है, इसके बजाय हर जगह मण्डली के ''प्राचीनों'' (ऐल्डरों) का ही हवाला मिलता है।

V. योग्यताएं

ज़्या कलीसिया में कोई भी विभिन्न पदों में आकर सेवा कर सकता था या उसके लिए कुछ योग्यताएं होनी आवश्यक थीं ? [1 से 5 नज़्बर में दी गई आयतें पढ़ें: प्रेरितों 1:21, 22; 1 तीमुथियुस 3:1-7; तीतुस 1:5-9; 1 तीमुथियुस 3:8-13; 2 तीमुथियुस 2:24, 25; 1 पतरस 4:11.] हर बार आयतों की *जांच* करने पर ज़्या विभिन्न पदों में से किसी पर भी सेवा करने

से पहले प्रतिबंधों और योग्यताओं का सज़्मान होना चाहिए। [*प्रत्येक* रिज़्त स्थान में ''हां'' भरें।] [इस भाग का उद्देश्य प्रत्येक पद में दी गई योग्यताओं पर विस्तार से चर्चा करना नहीं है। यह चर्चा फिर कभी हो सकती है। इसका उद्देश्य सीखने वाले की यह समझने में सहायता करना है कि इन जिज़्मेदारियों पर यूं ही किसी को भी मसीही को नहीं लगाया जा सकता।]

इस भाग में हमने ज़्या सीखा है ? हमने सीखा कि जिन लोगों को मण्डलियों में अलग-अलग ज़िज़्मेदारियां दी जाती थीं उनमें वे ज़िज़्मेदारियां देने से पहले उनमें कुछ योग्यताओं का होना बहुत ज़रूरी था।

निष्कर्ष

एक बात जो इस पाठ में हमें समझ आनी चाहिए वह यह तथ्य है कि कलीसिया में *एकमात्र* अधिकार यीशु के पास ही है। वह कलीसिया का सिर है, जिसने कलीसिया के काम करने से सज़्बन्धित निर्देश दिया है और इसे संगठित किया है।

I. *मसीह की कलीसिया में कौन-कौन से पद शामिल थे ?* यीशु सिर है। उसके अधीन प्रेरित, भविष्यवज़्ता, सुसमाचार सुनाने वाले, रखवाले (पास्टर्स) और सिखाने वाले (उपदेशक) हैं।

II. *इन पदों का उद्देश्य ज़्या था ?* इन पदों का मुज़्य उद्देश्य कलीसिया को मज़बूत बनाना था ताकि यीशु की अधिक से अधिक सेवा की जा सके।

III. *इन पदों पर ज़्या ज़िज़्मेदारियां थीं ?* नियम बनाना केवल यीशु मसीह के हाथ में है। उसने प्रेरितों और भविष्यवज़्ताओं के द्वारा कलीसिया को मानने के लिए निर्देश दिए हैं। प्रत्येक मण्डली को चाहिए कि उन नियमों का पालन करे।

स्थानीय मण्डलियों की अगुआई प्राचीनों (ऐल्डरों) द्वारा होनी चाहिए थी जो सुसमाचार सुनाने वालों, उपदेशकों, सेवकों (डीकनों), स्त्रियों और अन्य सदस्यों की यीशु की सेवा में अगुआई करते हैं। प्राचीन मण्डली के कामों में सहयोग देने और सदस्यों की आत्मिक भलाई के लिए काम करते हैं (इब्रानियों 13:17)।

प्रत्येक सदस्य की उस मण्डली में जिसका वह सदस्य है, विशेष भूमिका है। हर सदस्य सभी काम नहीं कर सकता।

IV. प्रत्येक कलीसिया में कितने रखवाले (ऐल्डर, बिशप या पास्टर) होते थे? प्रत्येक मण्डली की अगुआई एक से अधिक अगुवे करते थे। प्रत्येक मण्डली में अपने ऐल्डर, अपने रखवाले अर्थात बिशप्स और पास्टर्स होते थे और उसकी अगुआई किसी केन्द्रीय मुज़्यालय द्वारा नहीं होती थी।

V. ज़्या इन पदों में सेवा करने से पहले कुछ विशेष योग्यताओं का होना ज़रूरी था? जिन लोगों को मण्डलियों में जिज़्मेदारियां सौंपी जाती थीं उनके लिए सेवा करने से पहले इनके योग्य होना आवश्यक था।

पवित्र शास्त्र स्पष्ट सिखाता है कि केवल यीशु को ही कलीसिया पर अधिकार दिया गया था। किसी दूसरे के पास यह अधिकार नहीं है। यीशु के अनुयायियों के लिए ''वे सब बातें

मानना'' ज़रूरी हैं जिनकी *यीशु* ने आज्ञा दी है (मत्ती 28:20) न कि मनुष्यों की शिक्षाएं और आज्ञाएं।

अगले पाठ में, हम यह अध्ययन करेंगे कि यीशु आराधना में किन चीज़ों का इस्तेमाल चाहता है।

[सीखने वाले के साथ एक और अध्ययन के लिए समय निश्चित करें।]

भाइयों से सम्बन्धित

जॉन वैस्ले जब सवन्नाह, जॉरजिया में गए तो वहां 518 लोग थे। उनमें धनी, भारतीय, ग़ुलाम व निर्धन हर प्रकार के लोग थे। पहले रविवार जब वैस्ले ने प्रचार किया तो उसने देखा कि उनमें से कुछ लोगों ने जूते नहीं पहने थे। अगले रविवार और उसके बाद प्रत्येक रविवार वैस्ले भी जब तक जॉरजिया में रहे नंगे पांव ही पुलपिट पर आते थे।

एल्बर्ट हज़्बर्ड

लिटल जरनीज़ टू द होज़्ज़ ऑफ़ ग्रेट रिफारमर्स

हमारे सामने दूसरे लोग

प्रभु की प्रार्थना कहते हुए आप कभी ''मैं'' नहीं कह सकते। प्रभु की प्रार्थना करके आप कभी ''मेरा'' नहीं कह सकते।

ज़्योंकि इसकी प्रत्येक बिनती दूसरों के लिए ही है।

इसके आरज़्भ से अंत तक, कहीं ''मुझे'' नहीं कहा गया।

लेखक अज्ञात

यीशु की हंसी

किसी ने पूछा, ''ज़्या यीशु कभी हंसा था?''

दूसरे आदमी ने उज़र दिया, ''पता नहीं, पर मैं इतना अवश्य जानता हूं कि उसने मुझे वहां पहुंचा दिया जहां से मैं हंस सकता हूं!''

निजी सम्पर्क का महत्व

कई वर्ष पूर्व, एक युवक ने अपनी सहेली से विवाह करने की ठान ली। शर्मीला होने के बावजूद, वह उसे विवाह के लिए राज़ी करने के लिए हर रोज़ एक पत्र भेजने लगा। बिना नागा वह हर रोज़ एक प्रेम पत्र भेजता। अंततः, उसके तीन सप्ताह बाद, उस लड़की ने शादी कर ही ली; उससे नहीं बल्कि उस व्यक्ति से जो उसके पत्र पहुंचाता था!